

रविवार 5 अक्टूबर, 2025

विषय — कल्पना

स्वर्ण पाठः यशायाह 55: 7

" दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा। "

उत्तरदायी अध्ययनः यशायाह 55: 3, 6, 8-12

- ³ कान लगाओ, और मेरे पास आओ; सुनो, तब तुम जीवित रहोगे; और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बान्धूंगा अर्थात् दाऊद पर की अटल करुणा की वाचा।
- ⁶ जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो.
- ⁸ क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है।
- ⁹ क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है॥
- ¹⁰ जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहां यों ही लौट नहीं जाते, वरन भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं जिस से बोने वाले को बीज और खाने वाले को रोटी मिलती है,
- ¹¹ उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु, जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैं ने उसको भेजा है उसे वह सफल करेगा॥
- ¹² क्योंकि तुम आनन्द के साथ निकलोगे, और शान्ति के साथ पहुंचाए जाओगे।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 139: 23, 24

- ²³ हे ईश्वर, मुझे जांच कर जान ले! मुझे परख कर मेरी चिन्ताओं को जान ले!
- ²⁴ और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर!

2. इतिहास 33: 1, 2, 9-13, 15, 16

- 1 जब मनश्शे राज्य करने लगा तब वह बारह वर्ष का था, और यरूशलेम में पचपन वर्ष तक राज्य करता रहा।
- 2 उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् उन जातियों के घिनौने कामों के अनुसार जिन को यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाल दिया था।
- 9 और मनश्शे ने यहूदा और यरूशलेम के निवासियों यहां तक भटका दिया कि उन्होंने उन जातियों से भी बढ़ कर बुराई की, जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से विनाश किया था।
- 10 और यहोवा ने मनश्शे और उसकी प्रजा से बातें कीं, परन्तु उन्होंने कुछ ध्यान नहीं दिया।
- 11 तब यहोवा ने उन पर अशशूर के सेनापतियों से चढ़ाई कराई, और ये मनश्शे को नकेल डाल कर, और पीतल की बेडियां जकड़ कर, उसे बाबेल को ले गए।
- 12 तब संकट में पड़ कर वह अपने परमेश्वर यहोवा को मानने लगा, और अपने पूर्वजों के परमेश्वर के साम्हने बहुत दीन हुआ, और उस से प्रार्थना की।
- 13 तब उसने प्रसन्न हो कर उसकी विनती सुनी, और उसको यरूशलेम में पहुंचा कर उसका राज्य लौटा दिया। तब मनश्शे को निश्चय हो गया कि यहोवा ही परमेश्वर है।
- 15 फिर उसने पराये देवताओं को और यहोवा के भवन में की मूर्ति को, और जितनी वेदियां उसने यहोवा के भवन के पर्वत पर, और यरूशलेम में बनवाई थीं, उन सब को दूर कर के नगर से बाहर फेंकवा दिया।
- 16 तब उसने यहोवा की वेदी की मरम्मत की, और उस पर मेलबलि और धन्यवादबलि चढ़ाने लगा, और यहूदियों को इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की उपासना करने की आज्ञा दी।

3. यशायाह 54: 11, 13, 14, 17

- 11 हे दुः खियारी, तू जो आंधी की सताई है और जिस को शान्ति नहीं मिली, सुन, मैं तेरे पत्थरों की पच्चीकारी कर के बैठाऊंगा, और तेरी नेव नीलमणि से डालूंगा।
- 13 तेरे सब लड़के यहोवा के सिखलाए हुए होंगे, और उनको बड़ी शान्ति मिलेगी।
- 14 तू धार्मिकता के द्वारा स्थिर होगी; तू अन्धेर से बचेगी, क्योंकि तुझे डरना न पड़ेगा; और तू भयभीत होने से बचेगी, क्योंकि भय का कारण तेरे पास न आएगा।
- 17 जितने हथियार तेरी हानि के लिये बनाए जाएं, उन में से कोई सफल न होगा, और, जितने लोग मुद्ई हो कर तुझ पर नालिश करें उन सभी से तू जीत जाएगा। यहोवा के दासों का यही भाग होगा, और वे मेरे ही कारण धर्मी ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है॥

4. मत्ती 11: 1

- 1 जब यीशु अपने बारह चेलों को आज्ञा दे चुका, तो वह उन के नगरों में उपदेश और प्रचार करने को वहां से चला गया॥

5. मत्ती 12: 22-25, 30-33, 35-37

- 22 तब लोग एक अन्धे-गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए; और उस ने उसे अच्छा किया; और वह गूंगा बोलने और देखने लगा।
- 23 इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, यह क्या दाऊद की सन्तान का है?
- 24 परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।
- 25 उस ने उन के मन की बात जानकर उन से कहा; जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा।
- 30 जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिथराता है।
- 31 सलिये मैं तुम से कहता हूं, कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, पर आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी।
- 32 जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र-आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस लोक में और न पर लोक में क्षमा किया जाएगा।
- 33 यदि पेड़ को अच्छा कहो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो; या पेड़ को निकम्मा कहो, तो उसके फल को भी निक्कमा कहो; क्योंकि पेड़ फल ही से पहचाना जाता है।
- 35 भला, मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है; और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है।
- 36 और मैं तुम से कहता हूं, कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे।
- 37 क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा॥

6. रोमियो 12: 1, 2, 9, 10, 16, 21

- 1 इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।
- 2 और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो॥
- 9 प्रेम निष्कपट हो; बुराई से घृणा करो; भलाई में लगे रहो।
- 10 भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर दया रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो।
- 16 आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो; परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो।
- 21 बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई का जीत लो॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 472: 24 (सभी)-30

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

सारी वास्तविकता ईश्वर और उसकी रचना, सामंजस्य और शाश्वत में है। वह जो बनाता है वह अच्छा है, और जो कुछ भी बना है, उसके द्वारा बनाया गया है। इसलिये पाप, बीमारी, या मृत्यु का एकमात्र वास्तविकता यह भयानक तथ्य है कि अवास्तविकता मानव को वास्तविक लगती है, विश्वास को गलत करती है, जब तक कि भगवान उनके भेस को बंद नहीं करते। वे सत्य नहीं हैं, क्योंकि वे भगवान के नहीं हैं।

2. 490: 3-11

इच्छा-शक्ति तो विश्वास की उपज है, और यह विश्वास सामंजस्य को बिगाड़ता है। मानव इच्छाशक्ति एक पाशविक प्रवृत्ति है, आत्मा की क्षमता नहीं। इसलिए यह मनुष्य पर सही ढंग से शासन नहीं कर सकती। क्रिश्चियन साइंस सत्य और प्रेम को मनुष्य की प्रेरक शक्तियों के रूप में प्रकट करता है। इच्छाशक्ति—अंधी, हठी और हठी—भूख और वासना के साथ सहयोग करती है। इसी सहयोग से उसकी बुराई उत्पन्न होती है। इसी से उसकी शक्तिहीनता भी उत्पन्न होती है, क्योंकि सारी शक्ति ईश्वर की है, अच्छाई की।

3. 277: 7 (भगवान के रूप में)-12

चूंकि ईश्वर स्वयं अच्छा है और आत्मा है, अच्छाई और आध्यात्मिकता अमर होनी चाहिए। उनके विपरीत, बुराई और पदार्थ, नश्वर त्रुटि हैं, और त्रुटि का कोई निर्माता नहीं है। यदि अच्छाई और आध्यात्मिकता वास्तविक है, तो बुराई और भौतिकता असत्य है और एक अनंत ईश्वर का परिणाम नहीं हो सकता, अच्छा।

4. 396: 14-20 (से;), 22-28 (से;)

भौतिक इंद्रियों की गवाही का खंडन, इस गवाही के स्वीकृत मिथ्यात्व को देखते हुए, कोई कठिन कार्य नहीं है। खंडन इसलिए कठिन हो जाता है क्योंकि पाप या रोग की गवाही सत्य है, बल्कि केवल उसकी सत्यता में विश्वास की दृढ़ता, शिक्षा के बल और गलत पक्ष के मतों के भारी भार के कारण, यह कठिन हो जाता है।

सही समय पर बीमारों को समझाएँ कि उनके विश्वास उनके शरीर पर किस तरह प्रभाव डालते हैं। उन्हें दिव्य और स्वस्थ समझ प्रदान करें, जिससे वे अपनी भ्रांतियों का मुकाबला कर सकें और इस प्रकार नश्वर मन से बीमारी की छवि को मिटा सकें। इस बात को स्पष्ट रूप से समझें कि मनुष्य ईश्वर की संतान है, मनुष्य की नहीं; मनुष्य आध्यात्मिक है, भौतिक नहीं;

5. 327: 1-13 (से 2nd.), 22-24

सुधार यह समझने से होता है कि बुराई में कोई खुशी नहीं है, और विज्ञान के अनुसार अच्छे के लिए स्नेह प्राप्त करने से भी, जो अमर तथ्य को उजागर करता है कि न तो खुशी और न ही दर्द, भूख और न ही जुनून, या बात में मौजूद हो सकता है, जबकि दिव्य मन आनंद और पीड़ा, या भय और मानव मन के सभी पापी भूखों की झूठी मान्यताओं को नष्ट कर सकता है।

बदला लेने की खुशी में, क्या दयनीय दृष्टि दुर्भावना है! बुराई कभी-कभी किसी व्यक्ति के अधिकार की सबसे बड़ी अवधारणा होती है, जब तक कि अच्छाई पर उसकी पकड़ मजबूत नहीं हो जाती। तब वह दुष्टता में आनंद खो देता है, और यह उसकी पीड़ा बन जाती है। पाप के दुख से बचने का तरीका है, पाप को रोकना। और कोई रास्ता नहीं है।

सजा के डर ने कभी भी इंसान को सही मायने में ईमानदार नहीं बनाया। गलत को पूरा करने और सही की घोषणा करने के लिए नैतिक साहस की आवश्यकता होती है।

6. 291: 1-9

अधर्म को छोड़ते समय जिन पापों को क्षमा किया जाता है, वह खुशी पाप के बीच में वास्तविक हो सकती है, कि शरीर की तथाकथित मौत पाप से मुक्त हो जाती है, और यह कि भगवान का क्षमा याचना है लेकिन पाप का विनाश, - ये गंभीर गलतियाँ हैं। हम जानते हैं कि सब बदल जाएगा "एक पल में," जब आखिरी तुरही ध्वनि होगी; लेकिन ज्ञान का यह अंतिम निमंत्रण तब तक नहीं आ सकता जब तक कि ईसाई चरित्र की वृद्धि में प्रत्येक कम आमंत्रण के लिए नश्वर न हो गए हों।

7. 4:3-9

हमें सबसे अधिक जरूरत है, अनुग्रह में वृद्धि, धैर्य, नम्रता, प्रेम, और अच्छे कार्यों में व्यक्त की गई इच्छा की प्रार्थना। हमारे मास्टर की आज्ञाओं को रखने के लिए और उनके उदाहरण का पालन करने के लिए, क्या वह हमारे लिए उचित ऋण है और उसने जो कुछ भी किया है, उसके लिए हमारी कृतज्ञता का एकमात्र योग्य प्रमाण है।

8. 6: 3 (दिव्य)-7

ईश्वरीय प्रेम मनुष्य को सुधारता है और नियंत्रित करता है। पुरुष क्षमा मांग सकते हैं, लेकिन यह ईश्वरीय सिद्धांत केवल पापी को सुधारता है। परमेश्वर उस बुद्धि से अलग नहीं है जिसे वह श्रेष्ठ मानता है। वह जो प्रतिभा देता है, हमें उसे सुधारना चाहिए।

9. 5: 3-11, 29-32

गलत काम के लिए दुःख है, लेकिन सुधार की दिशा में एक कदम और बहुत आसान कदम है। ज्ञान द्वारा आवश्यक अगला और महान कदम हमारी ईमानदारी की परीक्षा है, - अर्थात्, सुधार। इसके लिए हमें परिस्थितियों के तनाव में रखा गया है। प्रलोभन बोली हमें अपराध को दोहराती है, और जो किया जाता है उसके बदले में आ जाता है। इसी तरह यह हमेशा रहेगा, जब तक हम यह नहीं सीख लेते कि न्याय के कानून में कोई छूट नहीं है और हमें "पूरी तरह से" भुगतान करना होगा।

एक प्रेषित कहता है कि ईश्वर का पुत्र [मसीह] "शैतान के कार्यों को नष्ट करने" के लिए आया था। हमें अपने ईश्वरीय उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए, और सभी बुरे कार्यों, त्रुटि और रोग के विनाश की तलाश करनी चाहिए।

10. 103: 6-17

विज्ञान के माध्यम से नश्वर मन के दावों का विनाश, जिससे मनुष्य पाप और मृत्यु दर से बच सकता है, पूरे मानव परिवार को आशीर्वाद देता है। हालांकि, शुरुआत में, यह मुक्ति वैज्ञानिक रूप से खुद को अच्छे और बुरे दोनों के ज्ञान में नहीं दिखाती है, क्योंकि बाद वाला असत्य है।

दूसरी ओर, माइंड-साइंस किसी भी आधे-अधूरे ज्ञान से अलग है, क्योंकि माइंड-साइंस ईश्वर का है और ईश्वरीय सिद्धांत को प्रदर्शित करता है, केवल अच्छे उद्देश्यों को पूरा करता है। अधिकतम अच्छाई अनंत भगवान और उनके विचार, सभी में है। बुराई एक झूठ है।

11. 458: 32-8

जैसा कि फूल अंधकार से प्रकाश की ओर जाता है, ईसाई धर्म पुरुषों को आत्मा से पदार्थ की ओर मुड़ने का कारण बनता है। मनुष्य फिर उन चीजों को नियुक्त करता है जो "आँख ने देखा नहीं और न ही कानों ने सुना।" पॉल और जॉन को स्पष्ट आशंका थी कि नश्वर मनुष्य बलिदान के बिना सांसारिक सम्मान प्राप्त नहीं करता है, उसी तरह उसे सारी दुनिया को त्यागकर स्वर्गीय धन प्राप्त करना चाहिए। तब उसके पास दुनियादारी के उद्देश्य, उद्देश्य और साधन के साथ कुछ भी सामान्य नहीं होगा।

12. 22: 11-12

"अपने स्वयं के उद्धार का काम करें," यह जीवन और प्रेम की मांग है, इस अंत के लिए भगवान आपके साथ काम करते हैं।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;"

ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6